पाठ 20. ऐ मेरे प्यारे वतन

पाठ का परिचय

कवि इस कविता में अपने वतन (देश) को याद करते हुए कह रहे हैं – ऐ मेरे प्यारे और बिछड़े हुए वतन, मैं तुझे याद कर रहा हूँ। तू मेरी इज़्ज़त है। मैं तुझपर अपनी जान कुर्बान करता हूँ। तेरा स्पर्श करके आने वाली हवा को मैं सलाम करता हूँ। तुझे याद करने वाले हर व्यक्ति से मैं प्यार करता हूँ। तेरी सुबह सबसे प्यारी है और तेरी शाम सबसे रंगीन है। माँ के रूप में कभी तू मेरे सीने से लग जाता है, तो कभी नन्ही-सी बेटी बनकर याद आता है। तू जितना याद आता है, उतना ही मन को तड़पाता है। आज मैं तुझसे दूर आकर बैठा हूँ, लेकिन तेरी मिट्टी की कसम खाकर कह रहा हूँ कि मन से यही चाह उभर रही है कि अंतिम साँस तेरी गोद में ही लूँ क्योंकि मैं तुझसे बेहद प्यार करता हूँ।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

विदेश में रहकर चाहे हम कितनी ही सुख-सुविधा अपने लिए इकट्ठी कर लें या ढेर-सारा धन जमा कर लें, लेकिन जो प्यार और अपनापन हमें अपनी धरती पर मिल सकता है वह और कहीं नहीं मिल सकता। यह धरती, जहाँ हमने जन्म लिया, हमारी माँ है। हमें इसके साथ सदैव नाता जोड़कर रहना चाहिए।

पाठ का वाचन

इस गीत को यदि अध्यापक/अध्यापिका गा सकें तो बेहतर है। गीत देशप्रेम की भावना से भरा है, अतः इसे भावपूर्ण रूप से तथा उचित उतार-चढ़ाव के साथ बच्चों के सामने पढ़ें। कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ। गीत का भाव स्पष्ट करें। गीत में आए विशिष्ट भावों को अभिव्यक्त करें।

महत्वपूर्ण चर्चा

निम्नलिखित प्रश्नों पर आधारित चर्चा बच्चों से कक्षा में करें –

- तुम कभी अपने देश से दूर गए हो?
- दूर रहकर अपने देश की कौन-सी बात तुम्हें याद आई?
- अपने देश में रहना पसंद करोगे या विदेश में? कारण बताओ।
- तुम्हारे किसी परिचित ने अपने देश को विदेश में रहकर याद किया है?